[illegible]

[illegible]

[illegible]

-: [illegible] :-

1) [illegible] 1926 — दोन पात्रे 1) [illegible]
2) [illegible]

2) [illegible] 1932 — तीन पात्रे 1) [illegible]
2) [illegible]
3) दुर्गा

3) [illegible] 1932 — एक पात्र 1) आशा देवी

4) [illegible] 1937 — दोन पात्रे 1) [illegible]
2) [illegible]

5) [illegible] 1937 — एक पात्र 1) चंपा

6) [illegible] 1937 — एक पात्र 1) [illegible]

-: [illegible] :-

[illegible] ([illegible])

१) [illegible]

२) [illegible]

३) [illegible]

४) [illegible]

५) [illegible]

६) [illegible]

७) [illegible]

८) [illegible]

९) [illegible]

१०) [illegible]

११) [illegible]

१२) [illegible]

१३) [illegible]

(१) नारी सुलभ भावना :-

मालती जानती है कि प्रेम करना यह नारी सुलभ भावना है। नारीकी वह नैसर्गिक प्रवृत्ती है जिससे नारीको संसारके लिये समझौता करनाही पडता है। किसी पुरुषका सहारा नारी चाहती है। उसके साथ रहनेमें, उसे अपना सब कुछ समर्पित करनेमें समाधान होता है। रमाशंकर मालतीके इन सब बातोंका ख्याल रख सकता है। इसीकारण वह उसके साथ विवाहके लिये स्वीकृती देती है। पुरुषकी अहम्मन्यतापर स्त्री विजय पाती है। ऐसा उसका कथन है।

" आप सदैव प्रेम करती रही प्रेम संपादकजी मुझे जरूरत है किसी पुरुषकी। मेरे साथ रहनेके लिये - अपनी जरूरतोंको पूरा करनेके लिये। इसी लिए मैंने रमाशंकरको पसंद किया। "इस समय चिरंतन नारीत्व ने पुरुषकी अहमन्यता पर विजय पायी है। तुम्हारी विजय हमारी विजय है। " — १

समझौतेकी वृत्ती :-

मालती औरोंके मनको तथा उनके भावनाओंको समझ सकती है। रोमैं-टिक प्रेमसे जीवनमें आनंद नहीं हो सकता बल्कि समझदारीसे अगर काम करेंगे तो जीवनमें दुःख नहीं आयेगा। समझदारीसे एक दूसरेका ख्याल रखनेका विचार रमाशंकर से वह कहती है। जीवनमें यह एक समझौताही है। अब वह जीवनके रोमांससे बाज आ गई है।

" जिसे प्रेम करे उसके सामने झुक जाना बिलकुल मिट जाना - अपनी एक एक बातपर उसको न्योछावर कर देना, रोमैंटिक प्रेम होता है। हमलोग प्रेम नहीं करेंगे विवाह करेंगे। समझदारीके साथ एक दूसरेका ख्याल करेंगे।। १

सहयात्री पृ.१५१ मालती

विवाह करेंगे (ब्रह्मचारीके साथ एक युवकसेभूवरेका व्याह करेंगे। ") - ?

मालती अंतमेंभी अपने जीवनसे समझौताही करती है। विश्वकांत कोभी वह ऐक सुखा जीवन देती है। और उसकी रमाशंकरसे मुक्ति पा लेती है। रमाशंकरसे उसने वादा किया है कि, अब कोई भी किसीके रास्तेमें नहीं आयेगा। जीवन सीधा चलेगा। मालती अंतमें अकेली ही बच जाती है।

"क्या यह भी उसका समझौता हो सकता है ?

(३) मानसिक द्वंद्व :-

मालतीने विश्वकांतकोभी वैराग्य धारण के लिये है। मालतीनेतो संन्यास ले लिया। पर क्या उसका मन सचमुच संन्यासी बना? क्या यह समझौता ठीक तरहसे हो गया? क्योंकि अब मालतीने तो समझौता जीवनसे किया। विश्वकांतकोभी उपदेश किया? मालतीको शरीर मुक्ती मिल गई पर उसकी आत्माकी स्थिति कौन जाने ? क्या वह सही रूपसे मुक्ती पा सकी? सही द्वंद्व रूपसे कुंठित पा सकी? यही द्वंद्व उसके मनमें होता है। क्योंकि अब वह रमाकांतको देवता बनाती है। जो संन्यासी है। और अब मालतीक प्रेम करनेवाली है पर कौनसा प्रेम? आत्मा या शरीरका ?

आखिर मालती अपने आपकोभी परिस्थितिके वश नहीं रखी।

" हां तुम अब मेरे देवता बन सके हो - - - - इस रूपमें - मेरे शरीरकी मुक्ती तो तुमसे मिल गई, लेकिन मेरी आत्मा? कौन जाने - ?

(४) पश्चाताप वश्यता :-

मालती विश्वकांतसे चाहती है कि वह अब विशुद्ध भावनासे उसे प्रेम करे। तथा कोईभी वासना मनमें नहीं रखे। विश्वकांत का मन इस बातके लिये राजी नहीं है। यह बात उसके लिये कठिन है। मालतीको पश्चाताप होता है कि उसीके कारण विश्वकांत को इतने आघात सहन

संन्यासी मालती पृ.१८५.

करना पड़े। मालती इससे दुःखी है कि, विश्वकांतके मनके विरुद्ध उसे अपना वर्तन रखना पड़ा। फिरभी उसका मन कहता है कि, उसने उसका सर्वनाश किया है। इसीलिये उसकी नैतिक विजय होना आवश्यक हो ताकि विश्वकांतके मनको मानसिक शांति मिले। विश्वकांतकी मनकी शांति मालतीके कारण नष्ट हो गयी है। इसका मालतीको पश्चाताप होता है।

" कहाँ जा रहे हो? मैंने तुम्हारा सर्वनाश किया। लेकिन कोई चिंता नहीं तुम्हारी नैतिक विजय होना चाहिये। "

जो कहती हूँ मानो - इससे तुम्हें मानसिक शांति मिलेगी। १

(५) अहंभावी वृत्ती :-

विश्वकांत मालती दोनों साथ साथ पढ़ते है। विश्वकांत संपादक है। फिरभी छात्रावस्थामें है। कालिजके लिये जब ऐसेक दिन उसे देर हो जाती है। रत्नाकर (प्रेफ प्रोफेसर) उसे वर्गमें आनेकी अनुमति नहीं देते। हाजिरीके बारेमें कुछ बाते उसमें होती हैं। जिसका कारण है विश्वकांतकी ७ दिनकी अनुपस्थिती। परिणाम यह होता है कि विश्वकांत बी.ए.के परीक्षामे बैठ नहीं सकता। इससे वह चिंतित है।

मालती विश्वकांतसे प्रेम करती है। अपने प्रेमीका अपमान वह सहन नहीं कर सकती। वह चाहती है कि, हो सकता है। विश्वकांतकी ७ दिनकी अनुपस्थितीका परिणाम गंभीरभी होने पर इसके लिये विश्वकांत लाचार होकर क्षमा तथा दयाकी भीख मांगे यह बुरी बात है। दोषी भी होंगे। पर मजबूरीसे जीनेमें कोई अर्थ नहीं।

मालती धनवानकी बेटी है। पैसोंसे वह जीवन [illegible] कर सकती है। पर विश्वकांतसे मजबूर होकर गर्दन झुकाना उसे मान्य नहीं है। इसी कारण विश्वकांतके सामने वह अहंभावी वृत्तीसे रहती है।

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

" तुमको इसकी चिंता ? इस साल बी.ए.की परीक्षा न दे सकोगे।
यही न ? इसलिये क्षमा माँगते हो? "

अपने प्रेमीका अपमान मालती सहन नहीं कर सकती।

फिरभी मालतीको ऐसा प्रेमी या प्रेमिका पसंद नहीं है जो दूसरेके सामने लाचारी से खडा रहे। स्त्री पुरुषकी इतनी लाचारी गलत बात है। ऐसे निर्बल चरित्र प्रेमीयोंसे मालती घृणा तथा द्वेष करती है। किसीके सामने हाथ जोडना उसे पसंद नहीं है। उसका स्वाभिमान वह कायम रखना चाहती है।

मैं उस लेखको और उस चरित्रोंसे घृणा करती हूँ। जो कोई प्रेमी हाथ जोड कर अपनी प्रेमिकासे प्रेम की भीख माँग रहा है। तो कहीं प्रेमिका घुटने टेककर प्रेमी के सामने अंचलमें फैलाती लग रही है। यह सब झूठ है। २

अहंभाव :-

मालती अमीरकी बेटी है। पैसेसे हर चीज खरीदी जाती है। ऐसा उसका कहना है। चिरकांतसे लिखी पुस्तक खरीदना चाहती है। चिरकांत चाहता है कि वह उस पुस्तकका लेखक है तब तक—उसका अधिकार उस पुस्तकपर है। मालतीका विचार है कि लेखक कोईभी होगा पर अधिकारतो जो पैसे देता है उसका होता है।

चिरकांतका मन इस विचारसे जल उठता है। क्योंकि मालती उसे अपमानित करती है। मालतीका वर्तन अहंभावी वृत्तीका है। वह अपने आपसे अधिक अच्छी समझती है।

चिरकांतने अपने   से यह पुस्तक लिखी है ऐसा कहना होनेके बावजूदभी उसे पैसोंका गर्व है।

संन्यासी पृ.८ मालती
संन्यासी पृ.१८२ मालती

नायिका :- गजलोंसे किरणमयीका व्यक्तित्व पहलू लिखा है।

किरणमयी संगीतप्रेमी ही नहीं वह अच्छी नायिकाभी है। नायक अपने मनमनमें दबी छिपी भावनाओंको व्यक्त करनेके लिए कविताका आश्रय लेता है। किरणमयी मुरलीधरके सामने अपने मनमें छिपा भावनायें व्यक्त करती है। क्योंकि उसके मनमें मुरलीधरके प्रति प्रेमभावना है।

" चलेंगे कब तक मेरे नाथ ?
किस अनजाने जगसे आकर,
रुक रुक, रह रह, पैर बढाकर
हिल - मिल कर, मेरे पियूषमें,
भर देते हैं गाना " .. ४

किरणमयी सितार बजानेके साथ साथ हारमोनियम तो कभी बाँसुरी भी बजाती है। उसे विविध ताल संगीतका ज्ञान है। -

" मुझे तो दिन रात सितार बजाना पडे तो ऊब जाऊँ -
इसी लिये कभी सितार - कभी हारमोनियम - और कभी
बाँसुरी बजाती हूँ। "

किरणमयी अच्छी नायिका भी है बार बार वह उदास मनको चेतनाभी देती है। और आंदोलित रखती है।

"चेतो मेरे मन - चेतो रे
जग यह छूटा रे मधुबनमें,
सुमन - सा न समझी भटकन का
माया - मोह - पर - - "

सन्यासी पृ.८० किरणमयी
सन्यासी पृ.९८ किरणमयी

" तुमने चाहे पैसा लिया हो – दाम लिया नहीं। " 3

(६) स्पष्टवक्ता :-

मालती के मनमें सुन्दरबनो" की भावना तो जरूर है पर वह स्पष्टवक्ता रहने के कारण रमाशंकर मालती से प्रेम करता है। पर मालती रमाशंकरसे द्वेष करनेसे कारण वह रमाशंकरका कोई कहना या स्तुति माननेकेलिये तैयार नहीं है। विश्वकांतसे वह कहती है कि

" नहीं समझा मैं तुम्हें प्रेम - -
क्या कहती हो?
जो कहती हूँ मानो। मैं तुम्हें
तुम्हारे साथ देख कर -
जल उठे " 1

मालती रमाशंकरसे स्पष्ट रूपसे द्वेष जाहिर कर देती है। उसे यह मान्य नहीं है कि रमाशंकरने उसे प्रेमकी दृष्टिसे देखा तथा उस प्रकारका वर्तनभी करे।

मालती रमाशंकरसे द्वेष अवश्य करती है। पर वह अपनी प्रतिष्ठाभी रखकर काम करती है। रमाशंकर मालतीके करीब आकर कुछ वर्तन(प्रेमका)करता है। तब मालतीके उदासीसे वह भी चिंतित है। वह उसके कंधेपर हाथ रखता है। रमाशंकर-उसके-कंधे यह उसे अच्छा नहीं लगता। किसीके घरमें कोई गैरवर्तन हो यह उसे पसंद नहीं है। इसीलिये वह हस्तपूर्वक वर्तन करनेकेलिये स्पष्टरूपसे कहती है। यद्यपि वह उससे प्रेम नहीं करती है। फिरभी स्पष्ट बोलती है।

1 सन्यासी पृ.30 मालती

का कहना है कि मनको वश करनेके काम बनते है। इसके पहले मालतीने विश्व-कांतसे सिर्फ प्रेम किया था, अब वह उसे अपना सर्वस्व समर्पित कर देगी। वह उसकी उपासना करेगी।

भारतीय स्त्री जिसे प्रेम करती है,सारा जीवन तथा शरीरभी उसीको समर्पित करती है। यह भारतीय भावना है। सभ्यता है।

" तुम सबकी मुझे पगमें लो। अब तक मैं तुम्हें प्रेम – अब तुम्हारीही उपासना -- " ५१

(७) स्वभाव वैचित्र्य :-

मालती विश्वकांतसे प्रेम करती है तथा उसका अपमान कोई और करे यह भी सहमत नहीं कर सकती। मालतीके पिताजीको पता चला है कि, विश्वकांत के कमरेमें मालतीकी उपस्थित थी।

विश्वकांत चिंत है कि, मालतीके पिताजी क्रोधित हो गये है। उसके पिताजीको यह भी पसंद नही है कि,मालती किसीसे प्रेम करे। मालतीके पिताका स्वभाव तीखा रहनेके कारण उन्होंने मालतीको अनी कटी बाते सुनाई मगर बादमें इसका क्या परिणाम हुआ? यह जाननेकी उत्सुकता विश्वकांत के मनमें रह गई। मालती विश्वकांतसे प्रेम करती है। यह बात तो स्पष्ट है पर उसी समयपर वह क्रोधित होकर कहती है कि,उसने पिताको संतोष तो नही हुआ। परन्तु यह समझ लो कि,उसके पिताको वे दोनोंके नहीं मिलनेसे संतोष होनेवाला है!

मालती शीघ्र कोपीत है। थोडीसी परिस्थिति प्रगट बदल जाती है तो वह अपने आपपर नियंत्रण रख नही पाती। और विचित्र वर्तन करने लगती है।

" हाँ,तुम मुझसे जितने दूर रहो --- मुझे उतना ही संतोष -

संन्यासी पृ.20 मालती

" यह सुरेश का घर है साधारण सम्पादक का पता तो -- २

मालतीको समझाना है कि सुलोचनाके हाथों लिखी चिट्ठी काफी नहीं है। मोती नौकर है। उसे अपनी मर्यादा का विचार करना आवश्यक है। ऐसा कहना मालतीका है। नौकरसे अधिक नहीं बोलना चाहिये ऐसा उसका विचार है। वह गुस्सेमें आकर कहती है कि

" तुम होशमें हो कि नहीं। नौकर को संभालकर मुँह खोलना चाहिए। २

मालतीको मोती अपराधीही है इसका ज्ञान देनेकी पड़ी है। मालतीने विश्वकांतसे स्पष्टरूपसे कहा है कि, अब विश्वकांतने मालतीसे घृणा करनी चाहिये। उसका दावा है कि, मालती के पास जब धन तथा सौंदर्य था तभी लेकर यहाँ मंडराते थे। मालती विश्वकांतके ऐक ऐक स्पर्शकेलिये तरसती थी। पर वह उसे नहीं मिला। न कि विश्वकांत उसे यह दे सका। मालतीने विश्वकांतको स्पष्ट रूपसे ठुकरा दिया है। इसी कारण मालती कहती है कि अब वह विश्वकांतसे घृणा करेगी न कि प्रेम।

" अब मैं तुमसे घृणा करूँगी और तुम मुझे। मैंने ऐसे आदमीसे विवाह किया है जिसे तुम जीवन भर घृणा करते हो इसलिये घृणा करोगे न ? --४

" मैं सुंदर थी, शिक्षित थी, अच्छे घरकी थी मेरे पास सभी साधन थे जिसकी आड में बैठकर हम दोनों संसारकी यातना और अशांतिको भूल जाते। लेकिन हम दोनोंके प्रेम का आधार वासना, जवानीकी उपभोग की इच्छा - ईश्वरने हम दोनोंको बचा लिया। -- ५

(८) समर्पित भावना :-

मालती विश्वकांतसे दिलो जानसे प्रेम करती है। वह विश्वकांतको अपने पिताकी बात माननेकेलिये मना करती है और उसके लिये जबरदस्ती विश्वकांत उसका पालन नहीं कर सकता यह उसे मालूम है फिरभी मालती-

सन्यासी पृ.५२ मालती

(९) भावनाओंका अुदात्तीकरण संगीत प्रेमी :- भावनाओं का विशेष नहीं है.

किरणमयी संगीतसे प्रेम करती है। वह सितार बजाती है। (१,२) किरणमयी अच्छी तरहसे सितार बजाती है ऐसा रमाशंकरजी कहता है। मुरलीधरसे भी यह मालूम किया है (३)

भावनाओंका अुदात्तीकरण

नायिका

मालती विश्वकांतसे प्रेमभी करती है। मानव आप अपने मनमें दबी हुई भावनाओंको शब्दोंद्वारा, गीतोंद्वारा या किसी कलाद्वारा अभिव्यक्त करता है। अभिव्यक्तिकरणकी क्षमता मालतीमें है। अपने मनकी भावनाओंको व्यक्त करनेके लिये वह गीतोंके द्वारा व्यक्त करती। जब वह अुदास रहती है। तब वह गीत गाती है।

" क्या कहते हो व्यर्थ ताप क्या?
मिलकर सबके तारे।
अरे अबोध अचल यह रजनी
इसके सुख सहारे "

मालतीने विश्वकांतसे अपने हृदयके समर्पण की भावना स्पष्ट की है। वह अब विश्वकांतकी उपासना करनेमेंहि अपने जीवनकी सार्थकता मानती है। अुस वक्तपर विश्वकांतको सहधर्मचारीकी प्रवृ-त्ती लेनेके लिये याचना करती है। अुसऔर अपनी भावनाये गीतोंमें व्यक्त करती है।

" विश्व विभव अंत विभूति
उत्सर्ग मिलन को मेरे।
कबतक चलते और रहेंगे।
मन के सपने तेरे ? "

सन्यासी पृ.५२ मालती

(१०) त्यागी प्रवृत्ति :-

मुरलीधर मालतीसे कॉलेज छोड़नेकी बात कहते है। निशिकांतके प्रति मुरलीधरका विचार बिलकुल खिलाफ है। वे नहीं चाहते कि मालतीसे निशिकांतका अधिक मेल जोल हो। निशिकांत यही मालतीको न छोड़ इस रोकने कह चुकी है। मालती समझदार है। वह किसीकोभी अपने बारेमें कष्ट देना नहीं चाहती। क्योंकि उसे विश्वास है कि, सिर्फ निशिकांतही उसे मार्ग बता सकता है। वही उसका गुरु बन सकता है। मालती जानती है कि, शायद निशिकांतको वह छोड़भी नहीं सकती। पर मजबूर अवसर रहकर वह उसेभी छोड़ेगी। क्योंकि वह निशिकांतकी भलाई चाहती है। जिसे वह दिलसे चाहती है उसका भी बुरा नहीं हो सके इसकी सतर्कता उसने रखी है।

" मुझसे वचन ले सकोगे? लेते तो देखूँ? इतना साहस? मैं तो स्वयं तुम्हारे मार्गसे हट जाना चाहती हूँ। तुम्हे छोड़नेमें मुझे कितना कष्ट होगा? मैं जानती हूँ किंतु मैं छोड़ दूँगी। "

(११) वासनारहित विशुद्ध प्रेम :-

मालती निशिकांतसे शरीर प्रेम का आकर्षण छोड़कर जीवनमें आत्मा के संबंधको जानने के लिये कहती है। जो महान तत्व है। मालती निशिकांतसे समझ पाती है कि, जीवनमें अब स्पर्शका प्रेम कामका नहीं है। बल्कि भावना रहित विशुद्ध प्रेमहि कामका है। अब मालतीने प्रण लिया है कि, वह शरीर प्रेम अब नहीं करेगी। और मनकी भावनाओं पर नियंत्रण पाती है। निशिकांत कोभी वही उपदेश करती है। हम देख पाते है कि मालतीका चारित्र्य कुछ ऊपर उठ गया है।

"अब मुझे इस भावसे स्पर्श करोगे तो पाप होगा – व्रत भंगका पाप सोच लो क्या कर रहे हो?

संन्यासी पृ.५३ मालती

रमाशंकर तथा मालती दोनों एक दूसरेके जिंदगीकी बातें व्यक्त करते है। सबकी बुरी बाते को टालनेके लिये कहते है। मालतीका पति मर जानेसे वह स्वतंत्र है। स्वातंत्र्य जीवन जी रही है। रमाशंकरका मालतीके प्रति पुराना प्रेम रहा है। पर परिस्थितिनुसार मालती बदल गई है।

मालती चाहती है कि,जो प्रेम समझदारीके साथ निभाया जा सके, वह शरीर सुख नही चाहती। अब वह सुख मानवी दुखोंके ऊपर उठ गयी है। वह रोमँटिक प्रेम नही चाहती। शरीर सुखभी नही चाहती। यद्यपि रमाशंकर उससे प्रेम करता है। दुनिया दारीमें तथा समझदारीसेही निभाया जा सकता है।

" अगर आप चाहे तो मुझे अब कोई विरोध नही है। मैं रोमँटिक प्रेम नही चाहती। चाहे आजकल की दुनियामें समझदारीके साथ निभाया जा सके। जिंदगजिंदगीमें प्रेमकी जगहता। बहुत कम है। सब तो दुनियाकी बाते।। २

मालती विशुद्धप्रेम चाहती है। उसका कहना है कि

" जिंदगीकी ठोस बातोंको समझना चाहिए।"

जीवनका असली अर्थ जब समझ जाता है तब वासनात्मक प्रेम कायम नही होता।

(१२) आदर्शवादी प्रवृत्ति :-

विश्वनाथके सामने मालती आदर्श रखना चाहती है। जीवन की गाडी ठीक चलनेके लिये वह प्रोत्साहन देती है। तथा जीवनमें केवल मालतीके कारण कोई दुःखी होवे,दुनिया छोडे यह मालती चाहती नहीं। वह औरोंको दुःख देनेकी प्रवृत्तिकी नहीं है।

" हमारे तुम्हारे ऐसे नाते बनेंगे। मेरे लिये दुनिया न छोडो। यह कोई अंधा आदर्श नहीं होगा। अपनी रक्षा करो। " १

सन्यासी पृ.१७९ मालती
सन्यासी पृ.१८२ मालती

(१३) तत्वज्ञानी :-

मालती विश्वनाथको जीवनका सही तत्वज्ञान बताती है। शरीर सुखका आकर्षण छोडनेके लिये कहती है। विश्वनाथके लिए तत्व यही जीवनका तत्वज्ञान मानती है। और उसे समझाती है कि, आत्माके सुखके लिये, शरीर का सुख तथा आकर्षण छोड दो। क्योंकि उससे जीवनमें सुख नही मिलेगा। सुखका त्याग करना आवश्यक है। तभी उसे महान सुख मिल सकता है। मालतीके इस सोच विचार करनेकी जीवनका वास्तव दर्शन जान जाती है।

"यही तो सच है। सुखका संबंध तुम्हारी आत्मा से है।
आत्माके सुखके लिये शरीरका सुख छोड दो" -- १

१) सन्यासी पृ. ५३ मालती

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY
एम. फिल.

(२) [illegible] :-

१) [illegible]

२) [illegible]

३) [illegible]

४) [illegible]

५) [illegible]

६) [illegible]

७) [illegible]

८) [illegible]

९) [illegible]

१०) [illegible]

११) [illegible]

१२) [illegible]

(१) भारतीय नारी :-

किरण मयी आदर्शवादी तथा आधुनिक विचारधाराके प्रतीक है। किरणमयी तथा मालतीके विचार होता है कि,जीवनमें कोमल प्रेम है श्रेष्ठ एवं महत्वपूर्ण है। तब स्पष्ट है की, जनम जनम अपनी प्रेमीका वरण करेगी,उसकी मान्यता यही बात भारतीय नारी ओढेगी। हरएक जन्ममें वह तो अपनी प्रेमीकी आराधना करेगी। भारतीय संस्कृतिका परिणाम किरणमयी परभी हुआ है।

।। तुम विश्वास नही करोगी लेकिन मुझे मालूम हो रहा है कि,ऐसा मेरा प्रेमी मेरे हृदयमें आ बैठा है। उसे मैं विसार नहीं सकती। वह मेरे भीतर है। बराबर रहता। इस जिंदगीमें दूसरी ~~जिंदगीमें~~ जिंदगीमें, जब कभी जन्म लूँगी वह मिलेगा। १।

(२) तत्वज्ञानी :-

किरणमयी मालतीसे अपनी प्रेमभावना छिपा नहीं सकती। गीतोंके आधार पर वह अपने आपको अभिव्यक्त करती है। मालतीका हृदय पिघल उठता है पर किरण मयीको स्त्री मन का आकलन हुआ है। उसके जीवनका गंभीर तत्वज्ञान परख लिया है। अनुभव किया है संगीतकलाके द्वारा जीवनमें शांति मिलेगा तथा दुखोंके बादल छट जायेंगे ऐसा उसका कहना है। स्त्री के जीवनमें अगर संगीत नहीं है तो सिर्फ दुखोंका बादलही भरा पड़ा रहेगा इसलिये वह अपने भावोंका उतार-चढ़ाव संगीत तथा गीतोंद्वारा करती है। मालतीसे वह कहती है कि,"बिलकुल नही? स्त्री जीवन इसके बिना अधूरा है ?

(१) कल्याणी पृ. १५२ किरणमयी।

(२) तत्वज्ञानी .कल्याणी किरणमयी पृ.२९

निरुपमाका कहना है कि, जीवनमें त्यागकाही महत्व हो सकता है तथा वही तत्त्व काम आ सकता है। जीवनमें अगर तत्त्वहीन जीना है तो कोई फायदा नहीं। शादी आदर्शोंको मानती नहीं है। यद्यपि जीवनभर इस शादीसे तथा शादीके तत्त्वोंसे घृणा करती है। निरुपमाको लगता है कि, करोड़ों गरीबोंकी भूख इससे मिट सकती है। जीवन सुधर सकता है। देशभी इससे सुखी हो सकता है। जीवनमें त्यागका विचारही कर सकता है। वह यह समझ नहीं है।

" इस समाजमें कोई भी मानवप्राणी चाहे वह स्त्री हो या पुरुष शादी किये बिना नहीं रह सकता। संसार इसकी उपयोगिता समझ रहा है। करोड़ो गरीबोंकी भूख इससे मिट सकती है। तुम्हारा सुख स्वाधीन हो सकता है।। २

निरुपमा औरोंके लिये जीनेमेंही समाधान मानती है औरोंका बोझ ढोने के लिये वह अपनी बात मानती नहीं। महात्मा गांधी अपने जीवनको पहाड़ नहीं समझते बल्कि औरोंके लिये जीने लगे हैं। जैसे कि महात्मा गांधी जिया करते थे।

" इसलिये कि वह अपनी है। ~~अपनी~~ अपनी जिंदगीका सुख दूसरोंकी जिंदगी में नहीं ले सकते। अगर अपनीही जिंदगी के लिये जीना पड़े तो वह जिंदगी अच्छी नहीं। वह तो बोझ हो उठती है। इसीलिये तुम इसे पहाड़ समझ रहे हो। शायद महात्मा गांधी जिन पर इतना दायित्व है, जिन पर इतना संकट और बंधन है - अपनी जिंदगी को पहाड़ नहीं समझते।

(३) सन्यासी पृ. ९३ निरुपमा।

(३) स्त्री भावनाओंकी समझ :-

निरुपमा भी यह मानती है कि, पुरुषोंने स्त्रीयोंकी मजाक उडाई है। उन्होंने स्त्रीयोंकी सिर्फ शिकार नहीं समझ रखा है। औरतोंके मनकी बात वे समझ नहीं पाते। इतना होनेपरभी स्त्री जातीको वे ठुकराते हैं। सचमुच पुरुषोंकी यह प्रवृत्ती स्त्रीको ठीक तरह समझ नहीं सकती।

स्त्रियाँ हमेशा धोखेमें ही मरती हैं तथा उसके मनकी कथा कोई जानता नहीं। निरुपमा भी नारी, होनेके कारण उन सब समस्याओंको समझ सकती है। उसे स्त्री जातीके प्रति सहानुभूति भी है।

" क्या कह रहे हैं? आप लोग हम लोगोंके दिलकी बात नहीं जानने पाते? असल्में हम लोगोंका दिल जलता है। आपके लोग समझते हैं रोशनी हो रही है। सचमुच पुरुष स्त्री के मनकी बात नहीं जान सके। बराबर धोखेमें पडे रहते हैं। हम लोग कहती नहीं सकती। " -- १

(४) औरतोंके प्रति प्रेम भावना :-

निरुपमा भी मालतीसे द्वेष करती है। उसे ठुकराती है। नफरत करती है। पर किसी औरतको दुःख हो यह बात उसे मान्य नहीं है। मालती का हृदय निरुपमा भीके वर्तनके प्रति झुककर पिघल जाता है। तब निरुपमा भी समझ पाती है कि मालतीका मन काफी दुःखी हुआ है। वह स्त्री मनको समझ सकती है तथा उन भावनाओंके साथ सहभागी भी हो सकती है। मालतीसे वह कहती है "

"तुम रो रही हो? हाय रे स्त्री का हृदय ? थोडीसी आँच और पिघल उठा? क्या हुआ ?"

मालतीके प्रति उसे सहानुभूति है। वह उसका दुःख समझ सकती है। आखिर निरुपमा भी नारी ही है।

सन्यासी पृ.८३-८४ निरुपमा भी।

सन्यासी पृ.२८ निरुपमा भी।

चिरवकांतने मालती को पत्र लिखा है तथा कोई बडी भूल की है ऐसा किरणमयी समझती नहीं। क्योंकि प्रेम तो हरकोई कर सकता है। प्रेम की भावना यह नैसर्गिक भावना है। प्रेम की भावना मानव को कभी आपा होश नहीं देती। इसमें आदमी कुछभी होश नहीं रखता। इससे चिरवकांतकी यह गलती कोई नहीं है। और उसे इसमें कारण बहू देना चाहिये ऐसी कोई बात नहीं है ऐसा किरणका मत है।

किरणनेभी अपने जीवनमें प्रेम किया है। इसी कारण वह औरोंकोभी समझ सकती है। दीनानाथका कोईभी बुरा हो यह किरणमयी चाहती नहीं।

"मेरी समझमें तो नहीं की प्रेम सोचने समझने नहीं देता। बेचारा प्रेम करता था।

(५) निस्वार्थी वृत्ती :-

किरणमयी दिवाकरसे कहती है कि जीवनमें स्वार्थ छोडना आवश्यक है तथा उसमें सच्चा सुख भी नहीं मिलनेवाला। औरोंकी ओरभी देखना चाहिये ताकि अपना स्वार्थ कम छोड सके। उसीमें सच्चा सुख है। मानवी ऊपर उठकर यह चर्चा किरणमयीका है। वह मानवत्वसे देवत्वकी ओर और सद्भावनाकी ओर बढता जा रही है।

" मनुष्यको अपनाही स्वार्थ नहीं देखना चाहिये। उसमें सच्चा सुखभी नहीं मिलता। दूसरोंकी ओरभी देखो"।

(६) अहंभाव :-

दीनानाथ किरणमयीसे कहते हैं कि अगर वे उसे नहीं मिलते तो किरणमयी किसी और जगह चली गयी होती। उसका चारित्र्य भी ठीक नहीं रहता। किरणमयी का स्पष्ट कथन है कि, अगर दीनानाथके बजाय कोई मजदूर मिल जाता और वह बुड्ढा न होता तो जरूर चली जाती। किरणमयी

अपाय है। उसकी मानसिक घुटन दीनानाथके कारण होती है। पर दीनानाथकी वजह से ही किरणमयी सुखी नहीं हो सकती। किरणमयी आशावादी भी है कि एक न एक दिन उससे इस समस्या का हल होगा और उसे जीवनमें कुछ मिलेगा।

किरणमयी दीनानाथसे द्वेष करती है पर उसका अपमान भी वह सहन नहीं कर सकती।

" अगर मजबूर हुआ नहीं होता तो बिना किसी शानके सुखी रहती। जहाँ कुछ नहीं वहाँ शान भी तो रहे। जीने के लिये कुछ कारण होना चाहिये। मैं तो इसी शानके लिये जी रही हूँ। "

(७) स्पष्टवक्ता :-

किरणमयीसे दीनानाथ प्रेमका वर्णन करते है। कुछ वार्तालाप इस बारेमें होता है। जीवनमेंही कोई बहरके तेज परवाना भट भटाते है। दीनानाथ चाहते है कि किरणमयी अंदर बाहर किरणमयीका स्पष्ट उत्तर है कि वह किसीसे पर्वा नहीं करती। न कि उसकी है। उसे डरकर प्रेम करना पसंद नहीं है।

" भीतर क्यों? मैं डरा नहीं करती।

मुरलीधर किरणमयीकी सब बाते सुनता है। किरणमयी काफी स्पष्ट तथा तीखे स्वभावकी होनेके कारण उसका मन कहने लगता है कि अगर वह बनाती रहेंगी तो किसीको नहीं कहेगी। और न किसे मिठाईके लिये कहूँगी। वह पुरुष जातीसे द्वेष करती है। अविश्वास करती है कि वे लोग नारीको बतानेके बजाय कुचले देंगे। उसके जीवनका चाराही करेंगे। उसका यह आत्मविश्वास भी है।

"मैं तो जब युवती रहूँगी तब भी आपको मिठाईको नहीं दूँगी। आप मिठाईका तो दूर रहा पत्थर फेंककर जल्दी दुआ देंगे। आपकी यहाँ कोईभी पुरुष नहीं मिठाईगा। दुआ देगा।

पुरुष जाति इतनी बेभरोसे की होती है कि, कब धोखा देवे। पता नहीं। मुरलीधरको उसने स्पष्ट कहा है कि,

"मैं खूब जानती हूँ। आप उन लोगोंमें हैं जो फूलसे खुशबू निकालकर फिर छोड़ देते हैं। आप ऐसे नेक-अनेक नाते कल्पना कर हृदय काँप उठता है।"

मालती फिसलती नहीं। क्योंकि वह स्पष्ट वक्ता है।

दीनानाथकी उम्र काफी बडी है। किरणमयीकी तबियत वहाँ नहीं लग सकती। वह तो जल्दी ऊब जाती है। दीनानाथ जानकर है कि किरणमयी निश्चितरूपसे उनके नियंत्रणमें नहीं रह सकती। इसी कारण भी समाज कोई अली करी उसे नजर नहीं सुनाये। वह साफ कह देती है कि, "मेरी तबियत तुम्हारे साथ कैसे लगेगी? सोचो? मैं तुम्हे देखती हूँ तो पिताजी याद पडते है। लेकिन एक बात है मेरी तबियत कहीं भी किसीभी जगह नहीं लग सकती। मैं तो जल्दी ऊब जाती हूँ। लेकिन कहीं रहना तो पडेगा। इसलिये तुम्हारे साथ रहना ठीक है। समाज उंगलीभी उठा नहीं सकेगा। हमारी और तुम्हारी हँसी-हँसीमें भलाई है।"

किरणमयीका दीनानाथसे साथ यह समझौता है।

(८) मानसिक द्वंद्व :-

किरणमयी दीनानाथसे समझौता नहीं कर पाती। पतिको देखकर वह पिताकी याद ताजी करती है। क्योंकि दीनानाथ उम्रमें काफी बडे है। पतिके सारे बाल सफेद होनेके कारण वह अपनी कोई वासनाभी पूरी नहीं कर पाती और उसके मनमें छिपी द्वंद्वावस्था वह स्पष्ट कर देती है कि,

"मुझे अपने पिताकी याद पडती है?

उसका मन द्वंद्वसे भरा है।

संन्यासी पृ.८३ किरणमयी

संन्यासी पृ.३७ किरणमयी.

(९) क्षुब्धता :-

किरणमयी श्रीनाथकी हरकतोंसे तंग आ गयी है। श्रीनाथ सिर्फ शराब और शरीरसुख चाहता है। दोनोंका बेमेल विवाह होनेके कारण समझौता नहीं, हो पाता। फिरभी किरणमयीको यह बात पसंद नहीं आती कि, श्रीनाथ दूसरी शादी कर लेनेकी धमकी देते है। तब क्षुब्ध होकर किरणमयी कहती है। ~~तब क्षुब्ध~~ कि -

"नहीं क्या हो - इससे कम युवती मिल जायेगी"[1]

दोनोंके पति पत्नीमें विचारोंकी भिन्नता होनेके कारण यह फर्क है ।

मुरलीधर किरणमयीका प्रेम चाहता है। समाजकी रुढ़ियो तथा बंधनोंसे मालती मुक्त नहीं है। वे दोनोंभी एक दूसरेको चाहते है, पर समाज उन्हे मान्यता नहीं देता। इस बातसे परेशान तथा हैरान है कि दोनोंभी जीवनमें दुःखी है। किरणमयी हताश होकर कहती है।

"लेकिन हम लोग तो हार रहे समाजकी झूठी रुढियोंसे।" किरणमयीके मुरलीधरका प्रेम पाँच वर्षतक छिपा रहा है। पर फिरभी एक दिन अचानक पुलीस का छापा पड़ता है। और मुरलीधर का स्वरूप समझमें आता है। किरण सविता कहता है कि अगर वह मुझे चाहता नहीं तो यहाँ क्यों रहा? अगर वह किरणमयीका प्रेम निभाभी नहीं सकता तो वह यहाँ किसलिये रहा। किरणमयी क्षुब्ध होकर कहती है कि, "मैं तुम्हारा प्राण हूँगी? जिसे आज पाँच वर्ष से अपने हृदयमें - तुम यहाँ आये क्यों और आये तो मुझे देखोहि क्यों गये? "

किरणमयीकी यह प्रवृत्ती बदला लेनेके हेतुसेभी स्पष्ट है।

२) [illegible] पृ.१०४ किरणमयी.

(१०) द्वेषभावना :-

हिरण्मयी दीनानाथको प्रेम करती नही। हिरण्मयीने दीनानाथको सिर्फ विवाह किया है। वह मनसे उसे चाहती नही। दीनानाथ उसके साथ हमेशा हँसी मजाक करते है। तथा शारिरीक वासनाओंकी पूर्ती हमेशा करना चाहते है। हिरण्मयीकी अवस्था काफी नाजुकी सी है। वह यह नही चाहती कि, किसीभी वेवक्त दीनानाथको अपने मनका इच्छा पूरी करे। रात दिन उसके मनकी तथा शरीर की शांति नष्टानेके लिये दीनानाथ पीछे पडे रहते है। हिरण्मयी उद्विग्नताने तथा मनके विरुद्ध कोईभी बात दिनानाथके साथ करना नही चाहती।

"हँसो जोरसे हँसो। तुम्हे हँसी आ रही है। और मुझे दर्द। जब नही तब - तुम जिसे - जब चाहते हो -- कोईभी हो -- रात हो या दिन हो बराबर अकेले। सवेरे उठती हूँ तो बडी देर तक, पैर जमीन पर सीधा नही पडता -- तुम्हे देखती हूँ तो काँप जाती हूँ।"

वैसेमें दीनानाथ शराबभी पीकर मस्त रहते है। इस बातका भी हिरण्मयीको द्वेष है। वह साफ कहती है कि

"इसलिये विवाह? -- जाने दो मैं तुमसे बहस नही करुंगी लाभ ही क्या? जब नहीं तब -- वही बात -- मेरा शरीर पत्थर नहीं है।

हिरण्मयी यह नाही चाहती कि दीनानाथ हमेशा उसे शारीरसुखकी पूर्ति कराने लगाये। इसी कारण बार बार हिरण्मयी अपनी अनिच्छा व्यक्त करती है। वैसेमें इन दोनोंमें उमरकाभी अंतर काफी है। जो बेमेल विवाहकी समस्या उपस्थित करता है।

दीनानाथ तथा हिरण्मयीमें कुछ वार्तालाप होता है। दीनानाथको हिरण्मयीने कहा कि हिरण्मयीने व्यर्थहि रमाशंकरकी जिन्दगी उजाडी तथा, मुरलीधरका खा लिया।

२) संध्यानी पृ. २७ मतली.

किरणमयी तथा दीनानाथमें हमेशा अनबन होते रहती है। फिरभी बीच बीचमें दीनानाथ किरणमयीको अपने करीब खींचते है। उसका चुंबनभी लेते है जो बात किरणमयीको पसंद नही है। गुस्सेमें आकर वह दीनानाथसे कहती है "फिर नही। तुम दिनरातमें कोई दो घंटा इसके लिये नियत कर लो।" "३"

किरणमयी दीनानाथके प्रति एक विचार स्पष्ट रूपसे कहती है कि, जबभी कभी उन्हे शरीर कामना पूर्तिकी याद आ जाये,उसके समय निश्चित करे।

किरणमयीकी दीनानाथके प्रति प्रेमभावनाके बजाय द्वेषही अधिक है। जिस जिसको मानव प्रेम करता है तब वह अपने हर चीजका त्याग भी करता है। पर यहाँतो किरणमयी दीनानाथसे सदैव द्वेषही करती आयी है।

"कोई समय निश्चित कर लो। मैं अपने शरीर को लेकर तुम्हारी सेवा में हाजिर हो जाया करूँगी - जो इच्छा हो। "४"

(११) पश्चाताप :-

किरणमयी अहंभावी जरूर है। स्पष्ट वक्ताभी वह है। पर वह इतना जान सकती है कि, वह क्षमा भी माँगकर अपना बडप्पन साबित कर सकती है। मुरलीधरको किरणमयीके कारण दुःखी हो यह बात उसे अच्छी नही लगती। क्योंकि उसके मिलनेसे मुरलीधरके मनको दुःखही पहुँचता है। इसलिये वह नाराज हो जाती है। और मुरलीधरसे कहती है।

" मैं क्षमा माँगने आई थी - मेरे कारण "।

कुछ बातें भूल जानेके लिये मुरलीधर उससे कहता है,तब मालतीका पश्चाताप और भी बढता है और वह कहती है -

मेरे लिये भूल जाना उतना आसान नही है।" - २

जो बाते दुःख देनेवाली होती है मानव उसे भूलभी नही सकता। तब मनमें वे बाते छिपी रहती है।

४) सन्यासी पृ. ३७ किरणमयी
सन्यासी पृ.१०२ किरणमयी

(१२) आधुनिक विचारधारा :-

किरणमयी अत्याधुनिक विचारधारासे प्रभावित है। उसका मन पिंजडेमें लगता नहीं उसकी उसका मन अपने मित्रोंमें मेलोंमे लग जाता है। पाश्चात्य सभ्यताके अनुसार वह चाहती है कि दीनानाथकी जहाँ दिल लगे वहाँ खेले और किरणमयीभी अपना दिल अपने मित्रोंमें बहलावे भारतीय पती पत्नीका नाता यह नही है। न कि किरणमयी यह नाता मानती है। उसने सिर्फ समाजके लिये दीनानाथसे विवाह किया है। जो एक करार है। वह चाहती है कि,पतीसे पर्दा करनेके बजाय विश्वास करना जरुरी है। इसी कारण उन दोनोंमें सदा अनबन होती रहती है। और झगडे चलते है।

किरणमयी भारतीय है। पर क्या यह उसका पतन भारतीय स्त्रीकों शोभा देनेवाला है? या यह बेमेल विवाहका परिणाम है? किरणमयी जैसी कितनी स्त्रियाँ अपने जीवनको जला रही है ? यह सब सामाजिक प्रश्नही तो है।

"मैं सोचती तो हूँ - लेकिन मैं जेलखानेमें नही रह सकती। मैं तुम्हारा विश्वास करती हूँ। तुम मेरा विश्वास करो। तुम इधर उधर फिरो और मेमोंसे मिला करते हो। मुझेभी अपने मित्रोंसे मिलने दो। हम लोगोंका न जा। विश्वासके बलपर जितना टिक सकता है उतना संदेह और ईर्षासे नहीं। हम लोगोंका नाता स्वाभाविक नहि - बनावटी हैं। उसे बनावटी ढंगसेही निभाना होगा।" १

दीनानाथसे वह चाहती है कि,दोनोंमें सिर्फ एक दूसरेपर विश्वास रखे। न कि उपदेशक बने। जहाँ तक हो सके,वो चाहती है कि दोनोंभी समझदार बने। एक दूसरेकी मजबुरीको जाने। और बिना कष्ट देते हुये स्त्री पुरुषा सिर्फ एक घरमें दोस्त जैसे रहे। ताकि जीवनमें समझौता हो। पर सिर्फ "समझौता" यह भारतीय संस्कृतिकी प्रतिष्ठान नही है। किरणमयी अत्याधुनिक विचारधारा में बहती जाती है। "कुछ नहीं। अब इसी में किसी तरह निभाना चाहिये। तुमभी समझदार बनो और मैं भी समझदार बनूँ। तुम मेरा विश्वास करो मैं तुम्हारा विश्वास करूँ। हम दोनों मिलकर रहे। दोनों एक दूसरेके लिये त्याग करे। दोनों एक दूसरेका ख्याल रखे। जहाँतक संभव हो सके।" २

सन्यासी पृ. ९० किरणमयी